## संपादकीय

# चंदे का फंदा

चुनावी चंदे में पारदर्शिता की दुहाई देकर राजग सरकार ने चुनावी बॉण्ड को मंजूरी देने के लिये जो कानूनी बदलाव किये थे, वे लोकतंत्र के मर्म को आहत कर सकते हैं। इस आशय की अर्जी चुनाव आयोग ने सुप्रीमकोर्ट में दाखिल की है। इसमें कहा गया है कि कानूनी बदलाव से चुनावी चंदे में पारदर्शिता लाने के प्रयासों पर प्रतिगामी प्रभाव पड़ेगा। इस बाबत केंद्र सरकार को चुनाव आयोग ने तब भी आगाह किया था जब 2017 में चुनावी बॉण्ड लाने के लिये नियमों में बदलाव किये गये थे। दरअसल, चुनाव आयोग ने एसोसिएशन फॉर डेमो `टिक रिफॉर्म्स यानी एडीआर की याचिका का जवाब देते हुए सुप्रीमकोर्ट में हलफनामा दाखिल किया। वहीं केंद्र सरकार का दावा था कि इलेक्टोरल बॉण्ड चुनाव सुधार की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। जिसके चलते सरकार ने फाइनेंस एक्ट, आर.बी.आई एक्ट, जनप्रतिनिधित्व कानून, आयकर कानून, कंपनी एक्ट तथा विदेशी अनुदान नियंत्रण कानून में परिवर्तन किये थे। वहीं आयोग का मानना है कि इन बदलावों से चुनावी चंदे में पारदर्शिता नहीं रह जायेगी। अब राजनीतिक दलों के लिये अर्जित चंदे की जानकारी देना अनिवार्य नहीं रह गया है, जिससे शेल कंपनियों के जरिये चंदा देने की प्रवृत्ति बढ़ेगी।

साथ ही चिंता इस बात की भी है कि अब सरकारी, निजी तथा विदेशी कंपनियों द्वारा दिये जाने वाले चंदे पर नियंत्रण नहीं रह पायेगा। नये नियम के अनुसार चंदा देने वाले का उल्लेख नहीं होगा। बड़ी चिंता इस बात को लेकर है कि नये कानून की वजह से विदेशी स्रोतों से बेहिसाब पैसा आ सकता है। लोकतंत्र के लिये यह घातक ही होगा कि चुनाव में मोटा चंदा देने वाली विदेशी कंपनियां सरकार बनने के बाद जनता से जुड़ी नीतियों को प्रभावित कर सकती हैं। इन चिंताओं से चुनाव आयोग विधि मंत्रालय को अवगत करा चुका है। आयोग ने वर्ष 2017 में इस पर चिंता जताते हुए इस निर्णय पर पुनर्विचार का आग्रह किया था। अब यह तय करना कठिन हो जायेगा कि जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा-29 बी का उल्लंघन हुआ है कि नहीं। दरअसल, इलेक्टोरल बॉण्ड योजना के तहत एक हजार से लेकर एक करोड़ तक के बॉण्ड उपलब्ध होंगे। दान देने वाला व्यक्ति बैंक की शाखाओं से इन्हें खरीदकर अपनी पसंद की पार्टी को दे सकता है, जिसे पार्टी पंद्रह दिन के भीतर पार्टी के खाते में कैश करा सकती है। इन बॉण्डों को बड़ी संख्या में कॉरपोरेट ने खरीदा है लेकिन इसमें चंदा देने वाले का नाम नहीं आता और इसमें टैक्स भी नहीं लगता। याचिका पर सुप्रीमकोर्ट दो अप्रैल को सुनवाई करेगी।

# देश के बैंकिंग सिस्टम को बदल सकती है आरबीआई और कोटक बैंक की कानूनी लड़ाई

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** बॉम्बे हाई कोर्ट में आज से कोटक महिंद्रा बैंक और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के बीच चल रहे एक मुकदमे की सुनवाई दोबारा शुरू होगी। हाई कोर्ट में होने वाली यह सुनवाई भारत की बैंकिंग इंडस्ट्री के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती है।

कोटक महिंद्रा बैंक में कोटक परिवार के 30 फीसदी स्टेक है, लेकिन आरबीआई के नियम के तहत किसी बैंक में प्रमोटर होल्डिंग की एक तय लिमिट है। रिजर्व बैंक ने प्रमोटर्स से 30 दिसंबर, 2018 तक कोटक परिवार का स्टेक 20 फीसदी के अंदर, मार्च 2020 तक 15 फीसदी के अंदर और उसके बाद 10 फीसदी के अंदर लाने को कहा था। ऐसा 4 साल पहले नए बैंक लाइसेंस के लिए जारी की गई गाइडलाइंस के अनुसार कहा गया था। कोटक परिवार ने सिलिकॉन वैली के टेक बॉस की तरह इसके लिए एक अलग तरीका चुना। प्रमोटर्स ने अपने प्रीफ्रेंस

शेयरों को इक्विटी शेयर्स से कम कर दिया। गौर करने वाली बात है कि प्रीफ्रेंस शेयर्स से वोटिंग राइट्स नहीं मिलते।

प्रीफ्रेंस शेयर्स को बेचकर, कोटक परिवार ने अपने स्टेक को 30 प्रतिशत से कम कर 20 प्रतिशत तक कर दिया है, जबकि वोटिंग राइट्स अपने पास ही रखे। लेकिन आरबीआई ने इसे खारिज कर दिया और जोर दिया कि वह चाहता है कि वह पेड-अप इक्विटी कैपिटल को कम करना चाहता है क्योंकि पहले वाले वोटिंग राइट्स रखना नियमों के खिलाफ है। इसके चलते ही प्राइवेट बैंकों में किसी एक व्यक्ति के मालिक होने की जगह कई अलग-अलग लोगों के पास मालिकाना हक होता है।

कोटक ने इस मामले में आरबीआई के खिलाफ कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और यह मामला अनचार्टेड टैरिटरी में है। देश में सार्वजनिक लोगों के अलावा अर्थव्यवस्था के लिए भी बैंकिंग एक महत्वपूर्ण सिस्टम है जिसे कड़े नियमों के साथ रेग्युलेट किया जाता है और आरबीआई ने इस मामले में अपना आखिरी फैसला दे दिया था। लेकिन कोटक ने अब इसे कोर्ट में चुनौती दे दी है। मार्च के दूसरे हफ्ते में सुनवाई के दौरान, प्रमोटर्स ने बताया कि वे 30 प्रतिशत स्टेक रखने के बावजूद वोटिंग राइट्स 20 प्रतिशत करने को तैयार हैं।

# आधार-पैन लिंक करवाने की समय सीमा फिर बढ़ी

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** आधार नंबर को पैन कार्ड से जोड़ने की अंतिम तिथि छह महीने बढ़ाकर 30 सितंबर 2019 कर दी गयी है। इससे पहले यह अवधि 31 मार्च तक ही थी। केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने रविवार रात यहां एक आधिकारिक विज्ञप्ति जारी कर यह जानकारी दी। गौरतलब है कि मीडिया में ऐसी खबरें आ रही थीं कि जो पैन कार्ड 31 मार्च 2019 तक आधार नंबर से नहीं जुड़े (लिंक) होंगे वो अमान्य हो जायेंगे।

विज्ञप्ति के अनुसार केन्द्र सरकार ने इस पर विचार करते हुए पैन कार्ड को आधार नंबर से जोड़ने की अंतिम तिथि छह महीने बढ़ाकर 30 सितंबर 2019 कर दी है। यह आदेश एक अप्रैल 2019 से लागू होगा। गौरतलब है कि आयकर रिटर्न भरने के लिए अपने आधार नंबर को पैन कार्ड से जोड़ना आवश्यक है। ऐसा किये बिना आयकर रिटर्न नहीं भरा जा सकता है।

# भारत ने अमेरिकी उत्पादों पर उच्च सीमा शुल्क की तारीख फिर बढ़ाई

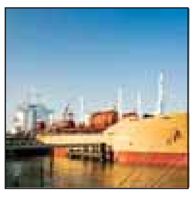

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** सरकार ने बादाम, अखरोट और दलहन जैसे 29 अमेरिकी उत्पादों पर बदले की कार्रवाई के तहत उच्च दर से आयात शुल्क लगाने की समय सीमा एक बार फिर दो मई तक के लिए बढ़ा दी है। वित्त मंत्रालय की अधिसचूना के अनुसार अमेरिका से आयातित कुछ विशेष वस्तुओं पर सीमा शुल्क बढ़ाने का निर्णय दो मई 2019 तक के लिए टाल दिया गया है। इससे पहले, एक अप्रैल तक के लिए इस निर्णय को टाला गया था।

सरकार ने जून 2018 में अमेरिका के कुछ इस्पात और एल्युमीनियम उत्पादों पर उच्च दर से सीमा शुल्क लगाने के निर्णय के बाद अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर उच्च दर से शुल्क लगाने का निर्णय किया था। लेकिन तब से लेकर अबतक इसके क्रियान्वयन की समयसीमा करीब छह बार बढ़ाई जा चुकी है। चूंकि दोनों पक्ष द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने को लेकर व्यापार पैकेज पर बातचीत कर रहे हैं, अतः भारत ने यह कदम उठाया है।

# बंद होने की कगार पर बीएसएनएल

**मुंबई (आरएनएस)।** भारत संचार निगम लिमिटेड यानी बीएसएनएल भारत की एक सार्वजनिक क्षेत्र की संचार कंपनी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बीएसएनएल के कर्मचारियों पर हर माह 1200 करोड़ रुपये खर्च होते हैं। यह कंपनी की कुल आमदनी का 55 फीसदी हिस्सा होता है। 11.5 यूजर होने के बावजूद भी कंपनी अपने कर्मचारियों को फरवरी माह की सैलेरी नहीं दे पाई है। उसने यह भुगतान मार्च में किया। यह स्थिति तब है जब जियो, एयरटेल और वोडाफोन-आइडिया जैसी प्राइवेट कंपनियां मुनाफा कमा रही हैं। कभी सबसे प्रतिष्ठित टेलिकॉम कंपनी मानी जाने वाली बीएसएनल का देश में मार्केट शेयर 9.7 फीसदी है। बता दें कि टेलिकॉम इतिहास में यह पहली बार है जब बीएसएनएल के कर्मचारियों की सैलरी अटक गई है।

# दुनिया के सबसे अमीर शख्स का स्मार्टफोन हैक

**वाशिंगटन (आरएनएस)।** अमेजोन के संस्थापक और सीईओ जेफ बेजोस के लिए काम करने वाले सुरक्षा अधिकारी ने आरोप लगाया कि सऊदी अरब ने बेजोस का स्मार्टफोन हैक किया और फिर गैरकानूनी तरीके से उनके विवाहेतर संबंध की खबर की जानकारी एक मीडिया कंपनी के साथ साझा की। द डेली बिट्स में शनिवार को छपे एक आलेख में गाविन डी बेकर ने कहा कि इसका मकसद जेफ बेजोस को बदनाम करना था, क्योंकि द वाशिंगटन पोस्ट के मालिक बेजोस ने पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या के बारे में खबरें चलाई थीं। बेकर ने कहा, हमारी छानबीन में पता चला है कि सऊदी के पास बेजोस के फोन की जानकारी थी, जिससे उन्हें उनसे जुड़ी निजी जानकारियों का पता चला। द नेशनल एनचायरी ने पिछले साल अक्टूबर में इस खबर को सार्वजनिक किया था, जिसमें जेफ द्वारा टीवी एंकर लॉरेन सैनचीस को भेजे गए संदेश शामिल थे।

# पाकिस्तान में महंगाई ने लगाई तेल कीमतों में आग

## पेट्रोल 98 रुपये, डीजल 117 रुपये लीटर हुआ

**इस्लामाबाद (आरएनएस)।** पाकिस्तान में सोमवार से पेट्रोल और डीजल के दामों में छह रुपए प्रति लीटर की भारी बढ़ोतरी का विरोध करते हुए विपक्षी नेताओं ने इसे तुरंत वापस लेने की मांग की है। इमरान खान सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों और देश की मुद्रा के कमजोर पडने् का हवाला देते हुए पेट्रोल और डीजल के दाम आज से छह रुपए प्रति लीटर बढ़ा दिए हैं। पाकिस्तान में दोनों ईंधनों की कीमत जुलाई.18 के बाद नौ माह के उच्च स्तर पर पहुंच गई हैं। पेट्रोल का दाम 98.89 रुपए और डीजल 117.43 रुपए प्रति लीटर हो गया है। नेशनल एसेम्बली में विपक्ष के नेता और पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज के अध्यक्ष शाहबाज शरीफ ने ईंधन के दाम बढ़ाये जाने पर सरकार पर हमला करते हुए

ट्वीटर पर लिखा पेट्रोल-डीजल के दाम में बढ़ोतरी को वापस लिया जाना चाहिए। शरीफ ने लिखा सरकार को पेट्रोल और डीजल के दामों में भारी बढ़ोतरी को वापस लेना चाहिए।

महंगाई की सुनामी पाकिस्तान के लोगों के जीवन को दूभर बना देगी। उन्होंने सवाल किया, इमरान खान के हाथ दामों में बढ़ोतरी के आदेश पर हस्ताक्षर करते हुए नहीं कांपे।

# दुबई वनडे : आस्ट्रेलिया ने 5-0 से सीरीज अपने नाम की

**दुबई (आरएनएस)।** आस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम ने अपने दमदार प्रदर्शन को जारी रखते हुए रविवार को यहां पांचवें और अंतिम वनडे मैच में पाकिस्तान को 20 रनों से हराकर सीरीज पर 5-0 से कब्जा कर लिया। मेहमान टीम की यह लगातार आठवीं वनडे जीत थी। आस्ट्रेलिया ने पिछली वनडे सीरीज में भारत को उसी के घर में शिकस्त दी थी। ग्लेन मैक्सवेल (70 रन एवं 1 विकेट) को उनके हरफनमौला खेल के लिए मैन ऑफ द मैच जबकि सीरीज में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले कप्तान आरोन फिंच को मैन ऑफ द सीरीज चुना गया। उन्होंने इस सीरीज में 451 रन जड़े। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए उस्मान ख्वाजा और फिंच की जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 134 रनों की जबरदस्त साझेदारी की। ख्वाजा अपना शतक नहीं पूरा कर पाए और 98 रन पर आउट हो गए। फिंच ने 53 रनों का अहम योगदान दिया। इसके बाद, मध्यक्रम में शॉन मार्श ने 61 और मैक्सवेल ने सिर्फ 33 गेंदों पर 70 रनों की पारी खेलकर ऑस्ट्रेलिया के स्कोर को 300 के पार पहुंचा दिया। उन्होंने अपनी पारी में 10 चौके और 3 छक्के लगाए। पाकिस्तान के लिए जुनैद खान ने तीन और उस्मान शिनवारी ने 4 विकेट लिए।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी पाकिस्तान की शुरुआत खराब रही। पिछले मैच में शतक लगाने वाले आबिद अली पहली ही गेंद पर आउट हो गए। दूसरे विकेट के लिए शान मसूद और हैरिस सोहेल के बीच 108 रनों की बेहतरीन साझेदारी हुई। मसूद ने 50 रन बनाए।

# वेस्टवे ने उतारी डायरेक्ट कूल रेफ्रिजरेटर की किफायती रेंज

**नई दिल्ली (आरएनएस)।** उपभोक्ता उत्पादों के निर्माण एवं व्यापार क्षेत्र की अग्रणी स्वदेशी कंपनी वेस्टवे इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने डायरेक्ट कूल सीरीज रेफ्रीजिरेटर की अपनी नवीनतम रेंज बाजार में उतारी है। इसकी कीमत 12000 रुपये से 15000 रुपये रखी गई है। कंपनी ने एक बयान में कहा कि एलईडी टीवी, एयर कूलर, सेमी-ऑटोमेटिक वाशिंग मशीन, एयर प्यूरिफायर और ब्लूटूथ स्मार्ट वॉच की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ-साथ वेस्टवे इलेक्ट्रॉनिक्स ने अब उत्तर भारतीय बाजारों में अपनी पैठ बनाने के उद्देश्य से 12000 रुपये से 15000 रुपये की मूल्य सीमा के भीतर डायरेक्ट कूल रेफ्रिजरेटर सीरीज को लॉन्च किया है।

# नए वित्तीय वर्ष के पहले दिन बाजार में शानदार तेजी, सेंसेक्स पहली बार 39 हजार के पार

**मुंबई (आरएनएस)।** देश के शेयर बाजार के शुरूआती कारोबार में सोमवार को मजबूती का रुख है। प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स सुबह 10.19 बजे 323.52 अंकों की मजबूती के साथ 38,996.43 पर और निफ्टी को भी लगभग इसी समय 80.00 अंकों की बढ़त के साथ 11,703.90 पर कारोबार करते देखा गया। बंबई स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का 30 शेयरों पर आधारित संवेदी सूचकांक सेंसेक्स सुबह 185.97 अंकों की मजबूती के साथ 38,858.88 पर जबकि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50 शेयरों पर आधारित संवेदी सूचकांक निफ्टी 41.30 अंकों की बढ़त के साथ 11,665.20 पर खुला। पिछले सप्ताह भी शेयर बाजार में कारोबारी रुझान मजबूत रहा, जिससे प्रमुख संवेदी सूचकांकों में एक फीसदी से ज्यादा की साप्ताहिक बढ़त दर्ज की गई।

# आज का राशिफल

मेषः- आज आपको कार्य के दौरान कुछ चुनौतियां मिलने की आशंका है। मातृ पक्ष से सहयोग मिलेगा। आर्थिक रूप से आज का दिन शुभ है।

वृषभः- आज आप नई योजनाओं को शुरू करने के प्रयास करेंगे और उसमें सफलता भी मिलेगी। घर में बच्चों के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा साथ ही घर के विषयों में भी आपकी रुचि बढ़ेगी। आज आपको भाग्य का साथ मिलेगा और धन कमाने के सुनहरे अवसर मिलेंगे।

मिथुनः- आज यदि आप अपनी रचनात्मक प्रतिभा को सही तरीके से इस्तेमाल करें तो वह लाभदायक होगी। परिवार में आज आपको जरा व्यवहारिक होने की जरूरत है, अति भावुकता आपको नुकसान पहुंचा सकती है।

कर्कः- काम-व्यवसाय में वृद्धि होगी और आप आर्थिक तौर पर मजबूती होगी। आपकी किसी लापरवाही या गलती की वजह से परिवार में अशांति होने की आशंका है। घर के बड़े बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

सिंहः- आप अपनी सोच और प्रतिभा के दम पर दूसरों को प्रभावित करेंगे। काम में सुख व सफलता प्राप्ति के योग हैं। परिवार में मामूली तनातनी की स्थितियां उत्पन्न होने की आशंका है। परिजनों और दोस्तों के साथ आपके बेहतर संबंध होंगे।

कन्याः- इस समय आपको नए कार्यों की योजना बनानी चाहिए। काईस अनुकूल होने के कारण संघर्ष अनुरुप सफलता का प्रतिशत भी अच्छा होगा। परिवार में आपसी तालमेल एवं सौहार्द की कमी होने की आशंका है।

तुलाः- आप इन दिनों काफी ऊंचे ख्यालों में खोये रहेंगे तथा कुछ कल्पनायें आपके मन को परेशान कर सकती हैं। किसी से भी वाद-विवाद करने से बचें। नौकरी में वेतन वृद्धि होने से आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी।

वृश्चिकः- आज आपको मेहनत करने का सुखद परिणाम मिलेगा। लेकिन लापरवाही करने वालों को रुकावट का सामना करना पड़ सकता है।

धनुः- ऑफिस में अपना धैर्य बनाए रखे। गुस्सा करना आपको नुकसान पहुंचा सकता है, प्रतिउत्तर देते समय सावधानी बरते। आज निवेश करने से पहले विचार जरूर कर लें।

मकरः- आप महत्वाकांक्षा या काम पर दिशा की कमी महसूस कर सकते हैं। आपको ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। शिक्षा प्रतियोगिता तथा संतान की ओर से संतोषजनक परिणाम प्राप्त होंगे।

कुंभः- वह कोई कार्य न करें जो आपको बोझ मालूम पड़े, अनावश्यक विवाद हो सकता है। जीवनसाथी से आपको काफी सहयोग मिलेगा व घर का वातावरण सौहार्द पूर्ण रहेगा।

मीनः- व्यापार में सही समय पर लिए गए निर्णयों से लाभ होगा। पारिवारिक मामलों में सोच-समझकर निर्णय लें। अगर आप भूमि-मकान आदि में निवेश करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए उत्तम है।

# हेल्दी डिश सेवईं उपमा...

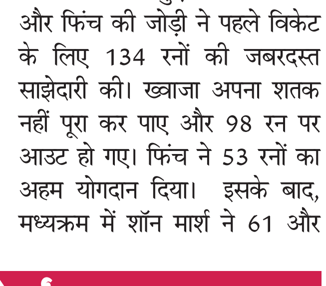

### सामग्री :

सेवई (भुनी हुई)- 1 कप, प्याज (बारीक कटा हुआ)- 1/4 कप, टमाटर (बारीक कटा हुआ)- 1/4 कप, हरी मिर्च (बारीक कटी हुई)- 2, ताज़ा मटर के दाने -1/4 कप, हल्दी पाउडर-1/4 छोटा चम्मच (टीस्पून), राई -1/4 छोटा चम्मच (टीस्पून), नमक-स्वादानुसार, तेल - 1 बड़ा चम्मच (टेबलस्पून), हरा धनिया (बारीक कटा हुआ)- 1 बड़ा चम्मच (टेबलस्पून), पानी-2 कप

### विधि :

सेवई उपमा बनाने के लिए, कड़ाही में तेल गर्म कर उसमें राई का तड़का लगाएं। जब राई चटकने लगे तब उसमें प्याज और हरी मिर्च डालें। बीच-बीच में चम्मच से हिलाते हुए धीमी आंच पर प्याज को सुनहरा होने तक सेकें। जब प्याज भुन जाए तब उसमें हल्दी पाउडर, टमाटर और मटर के दाने डालकर मिलाएं और ढककर धीमी आंच पर पकाएं। जैसे ही टमाटर और मटर के दाने पक जाएं तब इसमें भुनी हुई सेवई, नमक और 2 कप पानी डालकर मिलाएं। अब मध्यम आंच पर, ढककर, पानी के सूखने और सेवई के गलने तक पकाएं। पानी सूखने के बाद गैस बंद करें। अगर सेवई गलने के बाद भी पानी न सूखा हो तो ढक्कन हटाकर तब तक पकाएं जब तक पानी सूख न जाए। तैयार है सेवई उपमा, इसे हरे धनिए और टमाटर स्लाइस से सजाकर सर्व करें।

# शब्द सामर्थ्य-22

**बाएं से दाएं**

1. आय व्यय का लेखा-जोखा, गणित, एकाउंट 3. विनती, अदब 6. दृष्टांत, सुपुर्दगी, उदाहरण 7. मूल्यवान, बहुमूल्य 8. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 10. बराबर, सम 12. मुख, चेहरा 14. अनुकृति, अनुकरण, असल का विलोम 17. दिमाग, मस्तिष्क 18. मनोहर, सुंदर, इच्छित, प्यारा 19. गर्मी, ताप 21. रसिया, प्रेमी, रसपान करने वाला 23. दबाव, भार 24. भीख 25. काम से जी चुराने वाला, आलसी।

**ऊपर से नीचे**

1. साहस, वीरता, बहादुरी 2. बहिन, प्रवाहित होना 3. प्रणय क्रीडा, सुखोपभोग, हावभाव 4. विश्वास, प्रतीति 5. इंतजार 9. खाने-पीने का सामान, रसद 11. नशीला, मदभरा 12. घायल, जख्मी 13. झुकना, प्रणाम, नमस्कार 14. दृष्टि, निगाह 15. तीव्रइच्छा 16. अर्थ, अभिप्राय, स्वार्थ 20. इम्तिहान, योग्यता आदि को परखना 22. जुल्म, अन्याय 23. पत्नी, बीवी, एक प्रत्यय।

**शब्द सामर्थ्य क्रमांक 21 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दा | ढ़ी | ■ | की | ■ | खा | सो | आ | म |
| वा | ■ | त | म | न्ना | ■ | ■ | जा | ■ |
| न | जा | क | त | ■ | बा | अ | द | ब |
| ल | ■ | ली | ■ | वि | ला | प | ■ | हा |
| ■ | अ | फ | सा | ना | ■ | मा | हि | र |
| दा | ब | ■ | ■ | श | गु | न | ■ | ■ |
| न | ■ | उ | प | का | र | ■ | शि | ■ |
| व | ■ | त्स | ■ | र | ■ | त | क | ला |
| ■ | सा | व | न | ■ | गु | रु | वा | र |

# सू-दोकू-22

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | | | 4 | | | 7 | |
| | | 6 | 9 | | 2 | | | 1 |
| | 7 | | | 6 | | 8 | | 2 |
| 1 | | | | | | | 8 | |
| | 8 | | | 5 | | 2 | | 3 |
| 3 | | 2 | | | 4 | | 1 | |
| | 3 | | 2 | | | 4 | | |
| | | 8 | | 1 | 6 | | | 7 |
| 9 | | | 4 | | | | 2 | |

**नियम**

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

**सू-दोकू क्र 21 का हल**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 9 | 6 | 8 | 2 | 5 | 4 | 7 | 1 |
| 8 | 2 | 5 | 1 | 7 | 4 | 6 | 3 | 9 |
| 7 | 1 | 4 | 6 | 9 | 3 | | 2 | 5 |
| 1 | 8 | 9 | 3 | 6 | 7 | 2 | 5 | 4 |
| 2 | 6 | 7 | 5 | 4 | 8 | 1 | 9 | 3 |
| 5 | 4 | 3 | 9 | 1 | 2 | 7 | 8 | 6 |
| 6 | 7 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 1 | 8 |
| 9 | 5 | 1 | 7 | 8 | 6 | 3 | 4 | 2 |
| 4 | 3 | 8 | 2 | 5 | 1 | 9 | 6 | 7 |